ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

राष्ट्रीय एकता में लोक कला का योगदान

Contribution of Folk Art to National Integration

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

रविन्द्र कुमार
असि० प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

राष्ट्रवाद अथवा राष्ट्रीय भावना से आशय एक ऐसे जन समूह से है जो एक निशित भोगोलिक सीमाओ में रहकर समान परम्परा, समान हित तथा समान भावनाओ से बंधा हो तथा जिसमे सभी भी को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने की क्षमता हो I

भारत विभिन्ताओ में एकता वाला देश है जहाँ कदम- कदम पर विभिनता पाई जाती है जैसे भाषा की भिन्ता, धार्मिक एवं विभिनता , मतों की विभिनता , क्षेत्रीय व आर्थिक विभिनता (निर्धन एवं पूंजीपति) जातीय विभिनता आदि I इन विभिन्ताओ के भी भारत में राष्ट्रीय एकता का बीज पाया जाता हैI

Nationalism or national spirit refers to a group of people living in a certain geographical boundaries and bound by common traditions, common interests and common feelings and in which there is the ability to bind everyone in the thread of national unity.

India is a country of unity in diversity, where diversity is found step by step, such as language difference, religious and diversity, differences of opinion, regional and economic diversity (poor and capitalists), caste diversity etc. National unity in India even of these differences. seed is found

मुख्य शब्दः राष्ट्रीय एकता में लोक कला का योगदान।

Keywords: Contribution of Folk Art to National Integration.

प्रस्तावना

जब कभी राष्ट्र पर विपत्ति आई हैI सभी धमों , जातियों, सम्प्रदायों के लोगों ने एक होकर राष्ट्रीय भावना को सर्वोपरि रखा हैI हमारे देश कीसामाजिक , संस्क्रेतिक और राजनीतिक विवभन्नताओं में मोलिक एकता सदेव विधमान रही हैI हमारी संस्कृति नेतो राष्ट्रीय एकता की भावना को और बल दिया हैI संस्कृति के अंतरगत लोक कला रीति रिवाज़ अनुष्ठान , मेले, दर्शन, साहित्य,धर्म , संगीत, नृत्य, आदि ने देश के नागरिको को प्राचीन काल से वर्तमान तक एक भिन्ता में बांध रखा है जिससे प्रभावित होकर विदेशी सेलानी इसके अिलोकनाथि भारत में आते हैंI बोद्धकाल में बने वास्तु व शल्प आज भी हमारे राष्ट्रीय विन्ह हैI धार्मिक अनुष्ठान व वेशभूषा हमें भारतीयता से जोड़े रखती है तथा कु छ पारम्पररक आभूषण जो के केवल भारत में ही देखनेको मिलते हैअन्यत्र नही ये सभी हमे राष्ट्रीय भावना (एकता) में जोड़े रखती है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत देश संस्कृति तथा लोक कलाओ की दृष्टि से कुबेर कोष परिलक्षित होता है। इसके अन्तगित यहाँ के संस्कृति पक्षों यथा-धर्म, समाज रीति-रिवाज़ तथा सहज़ आनन्द सेपरिपूर्ण, सरल स्वच्छन्द और परम्परागत रूपों का अध्ययन किया जाता है। यह मनुष्य को कृत्रिमता से बन्धन मुक्तता और अहलाद की ओर खिचती है इसलिये आवश्यक है कीइ इन कलाओं का उपयुक्त सरक्षण प्रदान किया जाये| इनका समुचित प्रचार- प्रसार किया जाये क्यूँकि ये कलायें ही हमारे जन को राष्ट्र की श्रेष्ठ परम्पराओं को जोड़ती है तथा कलात्मक विविकास का समुचित माध्यम भी जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करती है। लोक कला राष्ट्र के लोगों के सौन्दर्य अभिव्यक्त करनेका प्रत्यक्ष और सरलतम रूप है जिसमे न कोई शास्त्रीय बन्धन होता हैऔर न कोई बनावटीपन | लोक कला ऐसे ही सीधे-साधे राष्ट्र के लोगों की अवभव्यक्त करता जिनका जीवन आधुनिकता की चमक से दूर होता है। लोक कला में एक ताजगी तथा स्थावयत्व होता है जो न कभी पुराना पड़ता है और न बदलता है। यह एक पीढी दूसरी पीढी को स्वतः हस्तांतररत होती रहती हैतथा राष्ट्रको एकता के सूत्र में जोड़े रखती है। व किसी भी राष्ट्र के लोक मानस की भावात्मक अभिव्यक्ति ही लोक कला को सवारती बनाती और विकशित करती है। प्रत्येक मानव की गहरी अभिरुचि लोक की परम्पराओं, आस्थाओं और विश्वासों के प्रति परिलक्षित होती है। यह अभिरुचि, लोक मानव के अशतितव की ही नही शाश्वतता की भी धोतक है। वास्तव में लोक ही राष्ट्र का अमर स्वरूप है। यह कहना अनुवित न होगा वक मानव या सहज़ अवचेतन ही लोक मानव है, यही कला तथा साहित्य का जन्मदाता है।

किसी भी राष्ट्र के लोक की वह सभी परम्पराएंए रूढ़ियांए आस्थाएँ और विश्वास जिन्हें मनुष्य ने आदिम अवस्था से अपनाया तथा जिसने युगों.युगों से चली आ रही जीवन यात्रा में स्वाभाविक रूप से हो जाने वाले परिवर्तनों को स्वीकार किया हैए ऐसे लोक मानस की भावाभिव्यक्ति को ही श्लोक कलाष् कहते हैंए लोक कलाकार परम्परागत तत्वों को बिना हृदयानवेषण किये उन तत्वो को ज्यों का त्यों ग्रहण करता जाता है। उसे इसकी चिन्ता नहीं होती कि लोकानुष्ठानो या लोक विश्वासों में कोई तथ्य है भी या नहीं वह उन्हें यथावत ग्रहण कर लेता है। भारतीय लोक कला के अनन्त कोष में सन्निहित अनगिनत भाव रूपों में एक ही ज्योति का अन्तर्भाव है तथा अनेकत्व में एकत्व की व्याप्ति के अनुसार सभी स्थानों की लोक कलाओ में एक ही ; लोक कल्याण की द्ध अनुभूति का प्रसार हैए जिससे राष्ट्र के नागरिक एक.दूसरे से कल्याण की भावनावश जुड़े रहते हैं

विषय-वस्तु

भारत देश संस्कृति तथा लोक कलाओ की दृष्टि से कुबेर कोष परिलक्षित होता है। इसके अन्तर्गत यहाँ के सांस्कृतिक पक्षों यथा.धर्मए समाज रीति.रिवाज तथा सहज आनन्द से परिपूर्ण सरलए स्वच्छन्द और परम्परागत रूपों का अध्ययन किया जाता है । यह मनुष्य को कृत्रिमता से बन्धन मुक्तता और अहलाद की ओर खींचती है इसलिए आवश्यक है कि इन कलाओं का उपयुक्त संरक्षण प्रदान किया जाये द्य इनका समुचित प्रचार.प्रसार किया जाये क्योंकि ये कलायें ही हमारे जीवन को राष्ट्र की श्रेष्ठ परम्पराओं से जोड़ती है तथा भावी कलात्मक विकास का समुचित माध्यम भी जन.जीवन के समक्ष प्रस्तुत करती है।

लोक कला राष्ट्र के लोगों के सौन्दर्य को अभिव्यक्त करने का प्रत्यक्ष एवं सरलतम रूप है जिसमे न कोई शास्त्रीय बन्धन होता है और न कोई बनावटीपन द्य लोक कला ऐसे ही सीधे.सादे राष्ट्र के लोगों की अभिव्यक्ति है जिनका जीवन आधुनिकता की चमक से दूर होता है। लोक कला में एक ताजगी तथा स्थायित्व होता है जो न कभी पुराना पड़ता है और न बदलता है। यह एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को स्वतः हस्तांतरित होती रहती है तथा राष्ट्र को एक सूत्रता में जोड़े रखती है।

किसी भी राष्ट्र के लोक मानस की भावात्मक अभिव्यक्ति ही लोक कला को संवारतीए बनाती और विकसित करती है । प्रत्येक मानव की गहरी अभिरूचि लोक की परम्पराओंए आस्थाओं और विश्वासों के प्रति परिलक्षित होती है। यह अभिरूचिए लोक मानस के अस्तित्व की ही नहीं अपितु उसकी शाश्वतता की भी धोतक है। वास्तव में लोक ही राष्ट्र का अमर स्वरूप है। यह कहना अनुचित न होगा कि मानव या सहज अवचेतन ही लोक मानस हैए यही कला तथा साहित्य का जन्मदाता है।

किसी भी राष्ट्र के लोक की वह सभी परम्पराएंए रूढ़ियांए आस्थाएँ और विश्वास जिन्हें मनुष्य ने आदिम अवस्था से अपनाया तथा जिसने युगों.युगों से चली आ रही जीवन यात्रा में स्वाभाविक रूप से हो जाने वाले परिवर्तनों को स्वीकार किया हैए ऐसे लोक मानस की भावाभिव्यक्ति को ही श्लोक कलाष् कहते हैंए लोक कलाकार परम्परागत तत्वों को बिना छिद्रान्वेषण किये उन तत्वो को ज्यों का त्यों ग्रहण करता जाता है। उसे इसकी चिन्ता नहीं होती कि लोकानुष्ठानो या लोक विश्वासों में कोई तथ्य है भी या नहीं वह उन्हें यथावत ग्रहण कर लेता है। भारतीय लोक कला के अनन्त कोष में सन्निहित अनगिनत भाव रूपों में एक ही ज्योति का अन्तर्भाव है तथा अनेकत्व में एकत्व की व्याप्ति के अनुसार सभी स्थानों की लोक कलाओ में एक ही ; लोक कल्याण की द्ध अनुभूति का प्रसार हैए जिससे राष्ट्र के नागरिक एक.दूसरे से कल्याण की भावनावश जुड़े रहते हैं

मुख्य अंश

भारतीय लोक कला या लोक शब्द की उत्पत्ति के विषय में कहा जा सकता है कि सुन्दर एवं अलंकारिकता के प्रति आकर्षण मानव मात्र की स्वाभाविक रूचि होती है। उसी से प्रभावित होकर मानव अपने चारों ओर के सौंदर्य को देखना चाहता है जिसमे राष्ट्रीय हित सन्निहित होता है। अतरू लोक कला के शाब्दिक अर्थ में ही उसका सम्पूर्ण तथ्य विद्यमान है। इस शब्द से ही उदबोधन होता है कि इसका जीवन एवं राष्ट्र से घनिष्ट एवं अटूट सम्बन्ध होता है। मुख्य रूप से भारतीय लोगों का जन्म और मरण लोक कला संसर्ग में ही होता हैए लोक कला किसी भी देश में रहने वाले लोगों के जीवन के समस्त पहलुओं की आधारशिला है। इन लोकचित्रों ने अशिक्षित लोगो को युग.युग से नीतिए धर्मए सदाचार तथा व्यवहार की शिक्षा दी है।

भारत में लोक कला ने अपना विकास विभिन्न रूपों में किया है प् उसका एक रूप परंपरागत विश्वासोंए रहस्यात्मक संकेतों और अतीत के संस्कारों पर आधारित था एवं दूसरा रूप वह था जिसमे सामाजिक रिति.रिवाजों की प्रमुखता थी । मोटे रूप में भारत में लोककला की परम्परा दो तरह से आगे बढ़ी प् उसका एक रूप तो शास्त्रीय था जिसके निर्माता या तो राज्याश्रित पेशेवर कलाकार थे या वे कलाकार थे जो स्वतंत्र साधना में लीन थे । इस शास्त्रीय कला के विकास का इतिहास अजन्ताए एलोरा, बाघ उसके बाद राजपूत मुगल एवं पहाड़ी अनेक शैलियों में अभिव्यंजित हुआ है। शास्त्रीय नियमों को ध्यान में रखकर जिस कला का निर्माण हुआ उसे शास्त्रीय कला के नाम से जाना गया और इसका दूसरा रूप ;लोक कला द्ध अपने इतिहास और ख्याति की अपेक्षा किये बिना हमारे पारिवारिक ए सांस्कृतिक ए एवं धार्मिक जीवन की परम्पराओं के साथ संबंद्ध होकर बिना किसी अवलम्ब आश्रय, प्रोत्साहन और प्रलोभन के स्वतंत्र स्वच्छन्द एवं सौम्य गति से निरंतर आगे बढ़ती रही।[2]अतः लोक कला एक नवीनता के गुण को सुसज्जित करती है तथा जो सरल एवं स्पष्ट लोक मानस द्वारा किसी भी राष्ट्र के अन्दर रची जाती हैं

भारत में राष्ट्र को एक सूत्रता में जोड़ने के लिए शास्त्रीय कला एवं लोककला के बीच की इकाई को श्बाजारूश् कला भी कहा जाता है प् इसलिए शास्त्रीय कला का बिगड़ा हुआ रूप श्बाजारूश् कला कहलाता है । बाजारू कला ने लोक कला को भी बहुत प्रभावित किया है प् संक्षेप में जो चित्र न तो शास्त्रीय कला की श्रेणी में रख सकते हैं । और न ही लोक कला की श्रेणी में रख सकते है प् ऐसी कला को बाजारू कला कह सकते हैं अतः इस प्रकार की कला को ;बाजार की मांग के अनुसार कार्य में बदलाव आने के कारण द्ध श्बाजारू कलाश् के नाम से जाना गया है प् बाजारू कला भी राष्ट्र की प्रगति में सहायक रही है लोक कला का एक रूप लोकाचारिक भी है जिसके अन्तर्गत जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त होने वाले सांस्कृतिक लोकाचारों के उपलक्ष में बनने वाली लोक कलाकृतियां आयेंगी, जिनका सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से विशेष महत्व है।[3] लोक वर्ग इन कलाकृतियों की परम्परागत रूप में अत्यन्त श्रद्धाभाव से उपासना करता है तथा राष्ट्रीय हित के लिए सभी इसका अनुसरण करते हैं

अतः राष्ट्र की उन्नति के लिए सांस्कृतिक ए आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से लोक कला का विशेष महत्व है प् हमारे सामाजिक जीवन तथा उत्सवों से भी लोक कला का घनिष्ट सम्बन्ध है तथा उन्हें एक दुसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है प् लोक कला का स्वरूप बहुत व्यापक है प् लोक कला में व्यावहारिक तथा ललित दोनों रूप व्यापक मात्रा में पाए जाते है प् लोक कला में दोनों पक्ष एकदूसाथ चलते हैं जो किसी राष्ट्र विशेष के विषय में जानकारी देते हैं किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को जानने के लिए वहाँ की लोक कला को जानना जरुरी है

भारतीय लोक कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की भारतीय ग्रामीण सभ्यता का । सिंधु घाटी की सभ्यता से मिले अवशेष को लोक कला का आरंभिक युग माना जा सकता है अर्थात इस आधार पर लोक कला तीन हजार ई व पू व मानी जा सकती है प् लोक कलाकारों ने प्रत्येक काल में लोक कला कृतियों का सर्जन किया है प् भारत की अनेक जातियों एवं जनजातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारम्परिक कलाएं आज भी बहुत लोकप्रिय है जैसे . माण्डने ए चौक पूरनाए रंगोली ए अहिपन अरिपन अल्पना ए मधुबनी ए वर्ली ए कालीघाट ए सांझी आदि।

भारत सामाजिक सदभाव एवं भाईचारे की दृष्टि से विकसित देश है यहाँ के ग्रामीण चित्रों में आज भी अधिकांशतः संयुक्त परिवार देखने को मिलते हैं जो संयुक्त रूप से सामाजिक उत्सवों में भाग लेते हैं। भारत में समाज के संचालन का मुख्य सिद्धान्त वर्ण व्यवस्था है प् भारत में प्रतीकों ने भी राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय भावना को प्रबल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जैसे तिरंगे झंडे के रंग राष्ट्रहित व राष्ट्रीय भावना को समेटे हुए है । प्रारम्भिक काल में प्रतीकों का प्रयोग भाषा के रूप में हुआ था प् हम लोक चित्रों में जिन आकारों का प्रयोग करते हैंए उनमे अनेक आकृतियों का अर्थ उस आकृति तक सीमित नहीं होता ए वरन वह आकृति कुछ और अर्थ भाव के लिए प्रयुक्त की जाती है ऐसी आकृतियाँ एक निश्चित भाव के संकेत अर्थात प्रतीक रूप में प्रयोग की जाती है जैसे अशोक की लाट व चक्र राष्ट्रीय प्रतीक है प् प्रतीक निर्माण की प्रवृति कितनी पुरानी हैघ् यह कहना कठिन हैप् भारतीयों ने अपने संस्कार और विद्या.बुद्धि के अनुसार निश्चित सिद्धान्तों पर और निश्चित उद्देश्यों से प्रतीकों का निर्माण किया जिनमे धार्मिक कार्यों ए सज्जा के रूप में तथा दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले लोक कला प्रतीक है प् इन धार्मिक प्रतीकों में स्वास्तिकए सप्तमातृकाए गौरी . गणेश ए हाथ के थापे तथा मेहन्दी आदि है प् धार्मिक प्रतीकों में मुख्यतः दो प्रकार के प्रतीक होते हैं एक विवाह सम्बन्धी दूसरा जन्म सम्बन्धी प् विवाह तो मानव जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है यह परम्परा तो हमारे देश में अति प्राचीन काल से ही चली आ रही है । विवाह का कोई भी कृत्य बिना लोकानुष्ठान के पूर्ण नहीं माना जाता तथा भारत में विवाह प्रणाली इतनी सुदृढ़ है यह स्त्री.पुरुष ए पति . पत्नी ए रिश्तेदार व परिवार के सदस्यों को एक कढ़ी में बांधे रखती है प्

भारत में हिन्दू धर्म के अंतर्गत संतानोत्पति भी एक पुण्य कार्य है जो प्रत्येक दम्पति एवं राष्ट्र के लौकिक और पारलौकिक उद्धार के लिए आवश्यक है ए यहाँ जन्म के समय थापेए दीये और कलश रखने की परम्परा है तथा यहाँ घड़े के ऊपर लगे थापों का अनुष्ठानिक महत्व हमें राष्ट्रीय भावना से जोड़े रखते हैं जो उद्देश्य में समस्त भारत में एक समान व समरूप देखने को मिलता है प्अतः भारत में प्रतीक धार्मिक अलंकरण एवं सामाजिक उत्सवों पर भी विशेष महत्व रखते हैं।4 लगभग समस्त शुभअवसरों जैसे विवाह जन्म-संस्कार ए गृह-प्रवेश आदि पर प्रतीकात्मक आकृतियों का प्रयोग किया जाता है जो पारम्परिक और स्वछन्द दोनों प्रकार की होती है । इनमे सतिया ए चौक . पूरना ए ओ३म् आदि प्रमुख है । भारतीय नागरिकों के जीवन को एक सूत्रता में जोड़ने का कार्य सज्जात्मक प्रवृति ने भी किया है । घर या मानव शरीर के अंगों को सजाने के साथ.साथ हम प्रत्येक वस्तु को सज्जात्मक रूप में देखना पसन्द करते हैं। सज्जा जो व्यक्तिगत अलंकरण के अन्तर्गत आती है इसमें मेहन्दी रचानाए महावर लगाना ए बिंदीए सिन्दूरए आदि की गणना की जा सकती है। इनके प्रति प्रत्येक स्त्री की विशेष रुचि होती है। साज श्रृंगार आदि स्त्री सज्जा के अन्तर्गत आता है इसके अतिरिक्त पुरुष सज्जा के अन्तर्गत गोदना ए पगड़ी पहनना तथा विवाह आदि पर मेहन्दी लगाना आता है । ये सज्जा की भावना समूचे भारत के स्त्री.पुरुषों में देखने को मिलती है जिस कारण हम पहनावे से ही दूसरे देशों में रहने वाले भारतीय लोगों की पहचान आसानी से कर लेते हैं। व्यक्तिगत श्रृंगार एवं सज्जा के साथ साथ मनुष्य अपने

चारों ओर के वातावरण को भी सुसज्जित देखना चाहता है इसलिए घरेलु उपयोग की वस्तुओं पर भी अलंकरण किया जाता है। यहाँ कुछ स्त्रियां तो प्रतिदिन ही दीवार या भूमि पर सरल एवं सुन्दर चित्र बनाती है। यहाँ त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर घर को विशेषतः सजाया जाता है। भारतीय सज्जात्मक रूपों को देखकर कहा जा सकता है कि यह लोक रंजनी एवं लोक सांस्कृतिक कला हमारी संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता का प्रतिनिधत्व करती है तथा मानव को अनुरंजन और कला.आनन्द प्रदान करती हैं तथा उसके अमूर्त भावों को सामाजिक, धार्मिक एवं ऋतुपरिवर्तन सम्बन्धी त्योहारों और उत्सवों पर प्रतीक रूप में चित्रित करके देश, राष्ट्र, जाति, समुदाय और परिवार के कल्याण की कामना करती हैं। यह भावनात्मक एकता को सार्वभौमिक और सर्वकालिक बनाती है। भारत की लोक कला के विकास एवं उसे प्राणवान बनाये रखने में यहाँ की महिलाओं का पर्याप्त योगदान है। यहाँ की लोक कला के विभिन्न रूपों को कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है।

भारत के लोक कलाकारों ने लोक तत्वों के आधार पर अपने अस्तित्व को सदैव से अलग रखा है। इन्होने प्रत्येक धार्मिक एवं शुभ अवसरों पर दीवारों और जमीन पर विभिन्न कलात्मक आकृतियां बनाई है। भारत के प्रत्येक राज्य में मुख्य द्वार को मंगल प्रतीकों से सुसज्जित किया जाता है। इन प्रतीकों में विभिन्न पशु एवं पक्षियों की आकृतियों के अतिरिक्त मानव आकृतियां, पेड़.पौधे, तथा पशुओं में घोड़ाए हाथीए ऊंट आदि को सवार के साथ अंकित किया जाता है तथा गायए बछड़ेए बैल आदि का अंकन भी शुभ माना जाता है।[5] यहाँ पक्षियों में मोर तथा तोते का अधिकता से अंकन हुआ है। लोक चित्रों में राष्ट्र के आदर्श स्त्री.पुरुषों के नाम जैसे राम-राम, सीता-राम राधे-श्याम आदि भी लिखा जाता है। इन चित्रों में बॉर्डर भी जरूर बनाया जाता हैए जिनमे बेलबूटे मुख्य रूप से बनाये जाते है। ये बलबूटे लहरदार, घुमावदार तथा कुछ ज्यामित्तीय आधार पर अंकित होते हैं।

भारत की शिल्प कला में मिटटी से निर्मित शिल्प का प्रचलन बहुत पुराना है। मिट्टी के शिल्प में बर्तनों के अलावा भारत के शिल्पियों ने अन्य सजावट से सम्बन्धित वस्तुओं का भी निर्माण किया है जिनमे मिट्टी के फूलदान ए खिलौनों में दौड़ता घोड़ा ए चिड़िया ए हाथी तथा विभिन्न देवी.देवता आदि का निर्माण किया है। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को इन बर्तनों की आवश्यकता होती है जिस कारण सभी एक.दूसरे से जुड़े रहते है। शिल्प कला में लकड़ी से निर्मित शिल्प भी बड़ी कलात्मकता से बनाये जाते है तथा लकड़ी की नक्काशीदार चोखटें तो आज भी अनेक संग्रहालयों में देखी जा सकती है।[6] दैनिक कार्य में इस्तेमाल होने वाले सामानों के अतिरिक्त बच्चों के खिलोने ए घर की सज्जा का सामान ए देवी . देवताओं की आकृतियां आदि का अंकन हुआ है। लकड़ी के शिल्प के अतिरिक्त भारत के विभिन्न प्रदेशों के लोग बांस ए सींक एवं गेहूं के तनो से अनेक प्रकार की गृह.उपयोगी वस्तुए बनाते हैं। जिनका उपयोग वे नित्य जीवन में करते है। इन शिल्प कार्यों के साथ .साथ भारत के कई क्षेत्रों में कपड़े की बुनाई ए छपाई ए बंधेज ए गलीचा आदि हस्त शिल्प का सराहनीय कार्य किया जाता है। भारत में कपड़े के शिल्प के अतिरिक्त धातुओं से भी विभिन्न प्रकार के बर्तन ए मूर्तियां और खिलौने तथा गृह उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती है देखा जाये तो प्रत्येक वर्ग अपने कौशल द्वारा राष्ट्र के विकास में योगदान देता है जिससे सभी एक.दूसरे के साथ मिल.जुलकर रहते है। भारत शिल्प और कारीगरी का अनूठा देश है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार से कारीगरों द्वारा नए नए प्रकार के शिल्पों का निर्माण किया जाता है। इन्हीं विद्याओं में एक विद्या कागज से बने शिल्पों की भी है जो देखने में सुन्दर ए हल्केए चमकदार और कलात्मक रूप लिए हुए बनाये जाते हैं भारत में पेपरमेशी द्वारा बने शिल्प तो देखते ही बनते है।

भारतीय संस्कृति में राष्ट्र के सभी नागरिकों को जोड़ने के लिए लोक कला को माध्यम बनाया गया है। ये लोक रूप न केवल शिल्प बल्कि यहाँ के तीज त्योहारों में भी देखने को मिलते है। भारत में त्योहारों को अत्यन्त मनोहारी रूप से मनाया जाता है तथा इन प्रत्येक त्योहारों एवं पर्वों के पीछे कोई न कोई राष्ट्रीय नायकों से सम्बन्धित लोक कथा जुड़ी रहती है इन कथाओं के आधार पर ही इन त्योहारों को उसी मान्यता और सदभावना से मनाया जाता है। इन पर्वों में नागपंचमीए दीपावलीए दशहराए अहोई अष्टमीए करवाचौथए साँझीए तीजए रक्षा बन्धनए गणगोरए होलीए बसन्तपंचमी आदि है। इन पर्वों पर राष्ट्र के लोग घर की दीवारों को परम्परागत तरीकों से सजाते है। इन दीवारों पर राजादृरानीए सूर्य.चन्द्रमाए सांप.बिच्छुए हंस.चिड़ियाए फूल.पत्ती आदि का अंकन किया जाता है। इन चित्रों द्वारा वातावरण को खुशनुमा बनाकर यहाँ के लोग इन त्योहारों का आनंद लेते है जिससे समस्त वातावरण उमंग से भर जाता है। यहाँ के लोगों में सदैव रंगदृबिरंगे और सजावटी वस्त्रों को पहनने का मोह सदैव रहा है तथा यहाँ के निवासी जितना आभूषणों को महत्व देते है उतना ही वस्त्रों को भी अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। विदेशी पर्यटकों तक को भारत की वेशभूषा आकर्षक लगती है। भारतीय स्त्रियां मौसम और पर्वों के अनुसार वस्त्रों को पहनती हैं। राजस्थान प्रदेश की स्त्रियां सावन में लहरिया ए शादी . विवाह में चुंदड़ीए पुत्र प्राप्ति पर पीलिया पहनने का प्रचलन है। यहाँ स्त्रियां कुर्ती ए कांचलीए अंगिया ए लहंगा ए घाघरी तथा विविध प्रकार की ओढ़नी और साड़ी पहनना पसंद करती है। अपनी वेशभूषा के कारण ये अपनी एक अलग पहचान बनाने में भी सफल हुई है। यहाँ पुरुष भी विभिन्न प्रकार के वस्त्रों जिनमे जामाए बागाए झग्गाए धोती एवं पगड़ी आदि को विशेष रूप से पसंद करते है।[7]इसी

प्रकार गुजराती लहंगेए पंजाबी सूट .सलवारए आसामए मेघालयए हिमाचल प्रदेश आदि के वेशभूषा अन्य देशों की वेशभूषा से अलग दिखाई देती है।

भारत में स्त्रियां सिर से लेकर पैरों की अँगुलियों तक में आभूषण धारण करती है। ये आभूषणों द्वारा सज्जा के उपरांत अपनी अंग सज्जा पर भी विशेष ध्यान देती है। वैसे भी भारत में अंग सज्जा तो हर युग में स्त्रियों की पसन्द रहा है। भारतीय महिलाए अपनी सौंदर्य साज.सज्जा एवं आभूषण.प्रेम के लिए जग प्रसिद्ध है।8 भारतीय महिलाएं मेहन्दीए महावरए बिंदीए सिन्दूरए काजल आदि द्वारा नियमित रूप से अंग.सज्जा करती है तथा ये गोदना विधि से अपने शरीर के अंगों को अलंकृत भी करती है।9 सारा श्रृंगार करने के उपरान्त ये विश्व प्रसिद्ध नक्काशीदार जूतियों को पहनना नहीं भूलती है जो इनके सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है। इस प्रकार हम देखते है कि भारत की लोक कला ने प्राचीन काल से ही अपने कला रूपों के माध्यम से लोगों को राष्ट्र से जोड़े रखा है।

निष्कर्ष

हम अलग.अलग जाति सम्प्रदाय के होने के बावजूद राष्ट्रीय भावना से जुड़े हुए है। अनेकता में एकता का गुण हमारी राष्ट्रीय भावना का अभिन्न अंग है। सभी सम्प्रदाय के लोग एकदृदूसरे के त्योहारों को मनाते है तथा अपने राष्ट्रीय पर्वों जैसे गणतंत्र दिवस व स्वतंत्रता दिवस पर समूचे भारत के लोग एक होकर एक झंडे के तले उसकी आन.बान.शान के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। भारत में कर्म के अनुसार सामाजिक वर्ग बने है जिनमे कार्यों का बंटवारा उनकी योग्यता एवं निपुणता के आधार पर किया गया है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक.दूसरे से जुड़े है जिससे राष्ट्र में बंधुत्व की भावना फैलती है और समस्त राष्ट्र एक सूत्रता में बंधा रहता है। हमारे रीति.रिवाजएमेलेएअनुष्ठानएवेशभूषा व सज्जा आदि को हम मिलजुलकर पूरा करते है। मानव बन्धुत्व के साथ साथ हमने पशु.पक्षियों व जीव जन्तुओं को भी अपने साथ जोड़कर उन्हें भी राष्ट्रीय भावना से जोड़ा है जिसका उदाहरण गाय को श्माताश् मानना है। जिसकी रक्षा के लिए पूरा राष्ट्र एक हो जाता है। इसी प्रकार विवाह

पर सन्तान प्राप्ति भी राष्ट्र निर्माण की महत्वपूर्ण कड़ी है। विवाह का मूल उद्देश्य सन्तान प्राप्ति ही है जो किसी भी राष्ट्र का भावी भविष्य होता है। अतः लोक कला का विभिन्न रूपों में अस्तित्व हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का सशक्त माध्यम है जिसका पोषण एवं अनुसरण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *"The sum of traditional art form which are the common property of the people (Folk) and not of any one clars as the property owners." (Alois Riegl) P-290*
2. *वाचस्पति गैरोला - भारतीय चित्रकला , पृ० सं० - 245 -246*
3. *Jaisalmer (folklore History and Architecture) L.N.Khatri , Mortuary Publication , Jaisalmer.*
4. *"The decorative part of those designs in the most fascinating and a very real means of expression of the heart's uplifts towards beauty."*
5. *"राजस्थान का इतिहास" - कर्नल जेम्स टॉड , यूनिक ट्रेडर्स , चौड़ा रास्ता*
6. *जयपुर , पृ० सं० - 48*
7. *मेरठ " दैनिक जागरण समाचार पत्र " 3 जून 2006*
8. *"आस्था , राजस्थानी समाज , कला एवं संस्कृति " संजय गुप्ता , आस्था प्रकाशन वैशालीनगर , अजमेर (राज०) पृ० सं० – 576*
9. *मेरठ " दैनिक जागरण समाचार पत्र " शनिवार 19 अगस्त 2006*
10. *बनारस की चित्रकला (18 वी से 20 वी सदी) डॉ० एच० एन० मिश्र कला प्रकाशन , न्यू साकेत कालोनी वाराणसी - 221005 पृ० सं० - 224*